بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 01.01. 2016 मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं को प्रभावहीन करने वाले न हों बल्कि उन दुआओं को जो आप अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत के लिए की हैं, उनके सदैव उत्तराधिकारी बनें। इस दुआ के साथ मैं आप सबको नव वर्ष की शुभ कामनाएँ देता हूँ। अल्लाह तआला इस वर्ष को हमारे लिए व्यक्तिगत रूप से भी तथा सामूहिक रूप से भी अत्यधिक बरकतों का कारण बनाए।

तशह्हुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

आज नए साल का पहला दिन है और यह जुम्अतुल मुबारक के बरकत वाले दिन से शुरु हो रहा है। प्रथा के अनुसार हम नए साल के शुरु होने पर हम एक दूसरे को मुबारकबाद देते हैं। मुझे भी नए साल के मुबारकबाद के पैग़ाम जमाअत के दोस्तों की ओर से प्राप्त हो रहे हैं आप जी एक दूसरे को शुभ कामनाएँ दे रहे होंगे। पश्चिम में अथवा प्रगति शील कहलाने वाले देशों में नए साल की रात, पूरी रात हा हू, शराब पीना, हुल्लड़ बाज़ी तथा पटाख़े और फुलझड़ियाँ जिसे फ़ायर वर्क्स कहते हैं, इनसे नव वर्ष का शुभारम्भ किया जाता है बल्कि अब मुस्लिम देशों में भी नव वर्ष का इसी प्रकार स्वागत किया जाता है। परन्तु अहमदियों में से अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से बहुत से ऐसे हैं जिन्होंने अपनी रात इबादत में व्यतीत की अथवा प्रातः सेवेरे उठकर नज़्ल नमाज़ पढ़कर नए साल के पहले दिन का शुभारम्भ किया। अनेक स्थानों पर तहज्जुद की नमाज़ जमाअत के साथ अदा की गई परन्तु इस सबके बावजूद हम उन मुसलमानों की दृष्टि में ग़ैर-मुस्लिम हैं तथा ये हुल्लड़ बाज़ी करने वाले, रक़मों का नुक़सान करने वाले, ग़ैर मज़हब के रिवाजों को बड़े हर्ष के साथ मनाने वाले ये लोग मुसलमान हैं।

अतः हम अल्लाह तआला की कृपा से मुसलमान हैं और हमें किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं। हाँ यदि हम किसी प्रमाण के इच्छुक हैं तो वह ख़ुदा तआला की दृष्टि में वास्तविक मुसलमान बनकर प्रमाण लेने की इच्छा है तथा इसके लिए केवल इतना काफ़ी नहीं कि हमने साल के पहले दिन व्यक्तिगत अथवा सामूहिक तहज्जुद की नामाज़ पढ़ ली अथवा दान पुन कर दिया, नेकी की कुछ बातें कर लीं और इसने हमें अल्लाह तआला की प्रसन्नता का भागीदार बना दिया। अल्लाह तआला तो निरन्तर नेकियाँ अपने बन्दे से चाहता है, अल्लाह तआला चाहता है कि उसका बन्दा निरन्तर उसके आदेशों का पालन करने वाला हो, नेकियाँ करने वाला हो, नमाज़ों तथा तहज्जुद के साथ दिलों में एक पवित्र क्रान्ति पैदा करने की आवश्यकता है तब ख़ुदा तआला प्रसन्न होता है। किसी प्रकार की ऐसी नेकी जो केवल एक दिन या दो दिन के लिए हो, वह नेकी नहीं है। अतः हमें सोचना चाहिए कि किस प्रकार के कर्म तथा व्यवहार हमें धारण करने चाहिएँ जो अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्राप्त करने वाला बनाएँ। इसके लिए मैंने आज ज़माने के सुधार के लिए भेजे हुए अल्लाह तआला के दूत की कुछ नसीहतों को लिया है जो आपने विभिन्न अवसरों पर अपनी जमाअत को की हैं ताकि निरन्तर तथा क्रमानुसार हम अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्राप्त करने का प्रयास करते रहें। यही बातें हैं जो केवल नव वर्ष के पहले दिन ही नहीं बल्कि साल के बारह महीनों तथा 365 दिनों को बरकत वाला करेंगी और हम अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को प्राप्त करने वाले बन सकेंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक अवसर पर फ़रमाते हैं कि अब दुनया की हालत को देखो कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तो अपने कर्मों से यह दिखाया कि मेरा मरना जीना सब कुछ अल्लाह तआला के लिए है और ये जो अब दुनया में मुसलमान मौजूद हैं किसी

से कहा जाए कि क्या तू मुसलमान है? तो कहता है, अलहज्दुलिल्लाह। जिसका कलिमा पढ़ता है उसके जीवन का सब कुछ तो ख़ुदा के लिए था परन्तु यह दुनया के लिए जीता है (कहते तो हैं ला इलाहा इल्लल्लाह परन्तु अल्लाह के बजाए, फ़रमाया कि दुनया के लिए जीता है) और दुनया के लिए ही मरता है। उस समय तक कि मौत का बुलावा आ जाए, मौत आ जाए, दुनया ही इसकी प्रिय, लक्ष्य तथा उद्देश्य रहती है फिर क्यूंकर कह सकता है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आज्ञा पालन करता हूँ। फ़रमाया कि यह बड़ी विचार शील बात है इसको हल्का फुल्का न समझो, मुसलमान बनना सरल नहीं है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आज्ञा पालन तथा इस्लाम का नमूना जब तक अपने अन्दर पैदा न करो, संतुष्ट मत हो जाओ.....

अतः यह बात अब भली भांति समझ में आ सकती है कि अल्लाह तआला का प्रिय बनना इंसान के जीवन का मूल उद्देश्य होना चाहिए क्यूँकि जब तक अल्लाह तआला का प्रिय न हो तथा ख़ुदा की मुहब्बत न मिले, सफल जीवन व्यतीत नहीं कर सकता तथा यह बात उस समय तक पैदा नहीं होती जब तक रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सच्चा आज्ञा पालन न करो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने कर्मों के द्वारा दिखा दिया है कि इस्लाम क्या है? अतः तुम वह इस्लाम अपने भीतर पैदा करो ताकि तुम ख़ुदा के प्यारे बन जाओ।

इस्लाम दुनया के वरदानों से मना नहीं फ़रमाता बल्कि दुनया में रहते हुए दीन को दुनया पर प्राथ्मिकता देने का उपदेश फ़रमाता है। इसके विषय में सैय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इस्लाम ने सन्यास लेने को मना फ़रमाया है, ये कायरों का काम है। मोमिन के सम्बंध जितना अधिक दुनया के साथ हों वे इसके उच्चतम श्रेणी होने का कारण होते हैं क्यूँकि उसका मूल उद्देश्य दीन होता है तथा दुनया एंव उसका माल दीन का सेवक होता है। अतः वास्तविकता यह है दुनया प्राप्ति मूल उद्देश्य न हो बल्कि इसकी प्राप्ति दीन के लिए हो तथा इस प्रकार दुनया प्राप्त की जाए कि वह दीन की सेवक हो। दुनया को प्रत्येक ऐसे साधन के द्वारा प्राप्त करो जिसके धारण करने से केवल भलाई एंव ख़ूबी ही न हो। वह मार्ग जो किसी अन्य मनुष्य की कठिनाई दूर करने का कारण बने, न कि मानव समाज में किसी लज्जा एंव अपमान का कारण बने, ऐसी दुनया निःसन्देह आख़िरत की भलाई का कारण होगी।

इस लिए मेरे दोस्तों की दृष्टि से अर्थात अहमदियों की दृष्टि में यह बात कदापि छिपी न रहे कि मनुष्य धन सम्पत्ति तथा स्त्री व संतान के प्रेम के जोश तथा नशे में ऐसी दीवाना तथा स्वार्थी न हो जाए कि उसके तथा ख़ुदा तआला के बीच एक पर्दा आ जाए अर्थात दूरी पैदा हो जाए, अल्लाह तआला से सम्बंध टूट जाए। फिर आप फ़रमाते हैं कि मेरे दिल में यह बात आई है कि -الحمد لله رب العالمين ۔الرحمن الرحيم اور مالک يوم الدين इसके द्वारा यह प्रमाण मिलता है मनुष्य इन गुणों को धारण करे अर्थात अल्लाह तआला के लिए समस्त स्तुतियाँ हैं जो रब्बुल आलमीन है अर्थात प्रत्येक संरचना में शुक्राणु में, लोथड़े इत्यादि में समस्त सृष्टि में अर्थात प्रत्येक सृष्टि में फिर रहमान है फिर रहीम है तथा मालिकि यौमिद्दीन है। अब इय्याका नअबुदु जो कहता है तो जैसे इस इबादत में रबूबियत और रहमानियत और रहीमियत और मालकियत जैसे गुणों की छवि मनुष्य ग्रहण करनी चाहिए। (यह अल्लाह तआला की विशेषताएँ जो हैं उनको ग्रहण भी करना चाहिए) फ़रमाया कि मनुष्य के बन्दा होने की उच्च श्रेणी यही है कि تخلقوا باخلاق الله अर्थात अल्लाह तआला के रंग में रंगीन हो जाए..... और जब तक इस स्तर तक न पहुंच जाए, थके न हारे।

फ़रमाया कि सदाचार यही है कि वह मौत का ध्यान रक्खे तथा संसार एंव उसकी वस्तुएँ उसकी ऐसी प्रिय न हों जो उस अन्तिम घड़ी में दुनया से जाते हुए कष्ट का कारण बनें और जब यह याद होगा, इंसान फिर नेकियाँ करने का प्रयास करेगा फिर व्यर्थ की बातों में पैसा नष्ट नहीं करेगा, न ही समय नष्ट करेगा और न ही व्यर्थ की अभिलाषाओं को पूरा करने के लिए इन चीज़ों को नष्ट करेगा। फिर पाक बदलाव पैदा करने के विषय में फ़रमाते हैं-

अतः निडर होकर मत रहो, इस्तिग़फ़ार और दुआओं में लग जाओ तथा एक पवित्र बदलाव पैदा करो। अब वह सुस्ती का समय नहीं रहा, मनुष्य को उसकी आत्मा झूठा भरोसा दिलाती है कि तेरी आयु लम्बी है। मौत को निकट

समझो, ख़ुदा का अस्तित्व सत्य है जो कुधारणों के कारण ख़ुदा का अधिकार किसी अन्य को देता है वह अपमान की मौत देखेगा.....

फिर पाक लबदीली तथा आख़िरत की चिंता तक़्वा से पैदा होती है और तक़्वा ही इंसान को सफलता प्रदान करता है इसके विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि तक़्वा वाले पर ख़ुदा का एक प्रकार का प्रकाश होता है, वह ख़ुदा के साए में होता है परन्तु चाहिए कि शुद्ध तक़्वा हो तथा उसमें शैतान का कुछ भी अंश न हो। तक़्वा सत्य है इसको याद रक्खो। फ़रमाया कि इसके लिए तुम सपनों एंव इलहामों के पीछे न पड़ा करो। किसी को इलहाम हुआ, किसी को सपना आया, कोई सच्चा सपना आ गया, कश्फ़ हो गया बल्कि तक़्वा प्राप्ति के पीछे लगो। यह न देखो कि किसी को क्या सच्चे सपने आ रहे हैं अथवा नहीं आ रहे हैं, यह देखो कि तक़्वा है कि नहीं। जो मुत्तक़ी है उसके इलहाम भी सच्चे हैं और यदि तक़्वा नहीं तो इलहामों का भी भरोसा नहीं।

अतः तक़्वा की परीक्षा में सफलता के लिए प्रत्येक कठिनाई सहन करने के लिए तत्पर हो जाए। तक़्वा भी एक परीक्षा है इसके लिए भी परिश्रम करना पड़ता है। जब मनुष्य इस मार्ग पर क़दम उठाता है तो शैतान उस पर बड़े बड़े आक्रमण करता है परन्तु एक सीमा पर पहुंच कर अन्ततः शैतान ठहर जाता है। यह वह समय होता है जब मानव को मनुष्य की गन्दी मानसिकता पर मौत आकर वह ख़ुदा की छांव में आ जाता है, वह अल्लाह का निशान और ख़लीफ़ः होता है। हमारी शिक्षा का संक्षिप्त विवरण यही है कि मनुष्य अपनी समस्त शक्तियों को ख़ुदा की ओर लगा दे।

फिर तक़्वा के संदर्भ में ही हमें उपदेश देते हुए फ़रमाते हैं कि तक़्वा धारण करने वालों के लिए शर्त है कि वे अपना जीवन निर्धनता एंव दरिद्रता में व्यतीत करें। यह तक़्वा की एक शाखा है जिसके द्वारा हमें अनुचित क्रोध का मुक़ाबला करना है। तक़्वा के द्वारा हमें जो अकारण क्रोध जो आ जाता है अथवा अकारण ही किसी का क्रोध हम पर हो, उसका विरोध करना है। बड़े बड़े अल्लाह वालों तथा सत्य मार्गियों के लिए अन्तिम एंव कड़ी परीक्षा क्रोध से बचना ही है। कुछ लोग बड़ों से मिलकर बड़े आदर का व्यवहार करते हैं (बड़ा आदमी हो, अमीर आदमी हो, बड़े सम्मान के साथ मिलते हैं, बड़ा आदर सत्कार करते हैं) परन्तु बड़ा वह है जो दुर्बल की बात को विनम्रता पूर्वक सुने (किसी दुर्बल तथा निर्धन व्यक्ति की बात को सुने तथा बड़े धैर्य से सुने, ध्यान पूर्वक सुने) उसका मन मोहने का प्रयास करे, उसकी बात का सम्मान करे, कोई चिड़ाने की बात मुंह पर न लाए कि जिससे दुःख पहुंचे। ख़ुदा तआला फ़रमाता है ولا تنابزوابالالقاب بئس الاسم الفسوق بعد الايمان ومن لم يتب فاولٰئک هم الظالمون तुम एक दूसरे के चिड़ाने वाले नाम न लो, यह बात घोर पापियों वाली है। जो व्यक्ति किसी को चिड़ाता है, वह मरेगा नहीं जब तक वह स्वयं इसी प्रकार न चिड़ाया जाए, अपने भाईयों को तुच्छ न समझो। जब एक ही स्रोत से सारा पानी पीते हो तो कौन जानता है कि किस के भाग्य में अधिक पानी पीना है। प्रतिष्ठावान एंव वैभव शाली कोई दुनया के माध्यम से नहीं हो सकता, ख़ुदा तआला की दृष्टि में बड़ा वह है जो तक़्वा वाला है ان اكرمكم عند الله اتقٰكم ان الله عليم خبير

फिर आप फ़रमाते हैं एक स्थान पर कि यदि तुम चाहते हो कि दोनों लोकों में तुम्हें सफलता प्राप्त हो तथा लोगों के दिलों पर विजय प्राप्त करो तो पवित्रता धारण करो, बुद्धि से काम लो तथा अल्लाह कलाम के आदेशानुसार चलो। स्वयं अपने आपको सुधारो तथा दूसरों को अपने शिष्ट आचरण का नमूना दिखाओ, तब हो सकता है कि तुम सफलता प्राप्त करोगे।

फिर इस ओर ध्यान दिलाते हुए कि कहने से पहले स्वयं कर्म करो, आप फ़रमाते हैं कि यदि इस प्रकार के लोग कर्म शील भी होते तथा कहने से पहले स्वयं कर्म करते तो क़ुरआन शरीफ़ में لم تقولون مالا تفعلون कहने की क्या आवश्यकता होती। यह आयत ही बतलाती है कि दुनया में कहकर स्वयं कर्म न करने वाले भी मौजूद थे और हैं और होंगे। अतः इस पर, यदि क़ुरआन-ए-करीम के आदेशानुसार कर्म करने हैं तो इस ओर भी ध्यान देना होगा। फिर इस उपदेश को विशेष रूप से हमें चाहिए कि हम पहले स्वयं आत्मनिरीक्षण करें तथा लेना चाहिए प्रत्येक को, और यह मूल

उपदेश विशेषतः ओहदेदारों को भी याद रखना चाहिए जो अन्य लोगों से तो अपने अन्दर बदलाव करने की आशा रखते हैं, उनको नसीहतें करते हैं परन्तु यदि अपने मामले ऐसी स्थिति पैदा हो जाए तो बिल्कुल उसके उलट करते हैं अथवा उसमें बहाने करते हैं तथा ख़ुदा तआला के आदेशों को और उसके रसूल के आदेशों को फिर द्वित्तीय श्रेणी में रख देते हैं, इस प्रकार के कई मामले सामने आ जाते हैं।

फिर कथनी-करनी में समानता के विषय में आप फ़रमाते हैं कि तुम मेरी बात सुन रक्खो और ख़ूब याद कर लो कि यदि मनुष्य की बात चीत सच्चे मन के साथ न हो तथा कर्मों का नमूना उसके साथ न हो तो वह प्रभाव पूर्ण नहीं होती।

फिर परस्पर बन्धुत्व तथा सहयोग एंव प्रेम के सज़्बंध में आप फ़रमाते हैं कि जमाअत के परस्पर सहयोग एंव मुहब्बत पर मैं पहले अनेकों बार कह चुका हूँ कि तुम परस्पर सहयोगी बनो तथा समूह के रूप में रहो। ख़ुदा तआला ने मुसलमानों को यही शिक्षा दी थी कि तुम एकता बनाए रक्खो अन्यथा हवा निकल जाएगी। नामाज़ में एक दूसरे के संग जुड़कर खड़े होने का आदेश इसी लिए है कि परस्पर एकता हो। विद्युत धारा की भांति एक की भलाई दूसरे में प्रवाहित होगी। यदि मतभेद हो, एकता न हो तो फिर अभागे रहोगे।

फिर आप फ़रमाते हैं कि मेरे अस्तित्व के द्वारा इन्शाअल्लाह एक निष्ठावान जमाअत पैदा होगी। परस्पर मतभेद का कारण क्या है? कंजूसी है, अहंकार है, अभिमान है तथा विकृत भावनाएँ हैं। फ़रमाया- ऐसे समस्त लोगों को आप बड़े खेद के साथ फ़रमा रहे हैं कि जो कंजूसी भी करते हैं, अहंकार है घमंड है अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण नहीं रखते, उन लोगों को जमाअत से अलग कर दूंगा जो अपनी दुर्भावनाओं पर कन्ट्रोल नहीं रज़ा सकते तथा आपस में बन्धुत्व एंव प्रेम के साथ नहीं रह सकते। जो ऐसे हैं वे याद रक्खें कि वे कुछ दिनों के मेहमान हैं जब तक कि अच्छा नमूना न दिखाएँ। मैं किसी के कारण अपने ऊपर आक्षेप लेना नहीं चाहता। ऐसा व्यक्ति जो मेरी जमाअत में होकर मेरी इच्छानुसार न हो, वह शुष्क टहनी की भांति है उसको यदि माली काटे नहीं तो क्या करे। शुष्क टहनी अन्य हरी भरी टहनियों के साथ रहकर पानी तो चूसती है परन्तु उसको हरा भरा नहीं कर सकती बल्कि वह टहनी दूसरी टहनी को भी ले बैठती है।

फिर दुआ की क़बूलियत की शर्त के विषय में आप फ़रमाते हैं कि यह बात भी मन की एकाग्रता से सुन लेनी चाहिए कि दुआ के क़बूल होने के लिए भी कुछ शर्तें होती हैं उनमें से कुछ तो दुआ करने वाले के विषय में होती हैं तथा कुछ दुआ कराने वाले के विषय में। दुआ कराने वाले के लिए अनिवार्य होता है कि वह अल्लाह तआला के भय एंव प्रसन्नता को सज़्मुख रक्खे तथा उसकी व्यक्तिगत निष्पक्षता से सदैव डरता रहे तथा सन्धि एंव ख़ुदा परस्ती अपना नियम बना ले। तक़्वा तथा सदाचार के द्वारा ख़ुदा तआला को प्रसन्न करे तो ऐसी अवस्था में दुआ के लिए क़बूल होने का द्वार खोला जाता है।

अतः जिन प्रस्थितियों में तक़्वा की शर्त दुआ के क़बूल होने के लिए एक अनिवार्य अनुबन्ध है तो एक मनुष्य अज्ञानी तथा भ्रष्ट होकर यदि दुआ को क़बूल कराना चाहे तो क्या वह मूर्ख तथा नादान नहीं है। अतः हमारी जमाअत के लिए आवश्यक है कि जहाँ तक सज़्भव हो प्रत्येक इनमें से तक़्वा की राहों पर क़दम मारे ताकि दुआ के क़बूल होने का आनन्द एंव हर्ष प्राप्त करे तथा ईमान में वृद्धि का सौभाग्य प्राप्त करे।

अल्लाह तआला करे कि हम अपनी ज़िन्दगियों को आप अलैहिस्सलाम की अभिलाषा के अनुसार ढालने वाले हों तथा हमारे क़दम नेकियों की ओर बढ़ने वाले क़दम हों हर पल। हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं को नष्ट करने वाले न हों बल्कि उन दुआओं को जो आप अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत के लिए की हैं, उनके सदैव उत्तराधिकारी बनें। इस दुआ के साथ मैं आप सबको नव वर्ष की शुभ कामनाएँ देता हूँ। अल्लाह तआला इस वर्ष को हमारे लिए व्यक्तिगत रूप से भी तथा सामूहिक रूप से भी अत्यधिक बरकतों का कारण बनाए।